राजभाषा विविधा
अंक 31 राजभाषा विभाग, वेस्टर्न कोलफील्ड्स लिमिटेड 2017-18

सिकन्दर की शपथ

जयशंकर प्रसाद

सूर्य की चमकीली किरणों के साथ यूनानियों के बरछे की चमक से मिंगलौर- दुर्ग घिरा हुआ है। यूनानियों के तोड़ने वाले यंत्र दुर्ग की दीवालों से लगा दिये गये हैं, और वे अपना कार्य बड़ी शीघ्रता के साथ कर रहे हैं। दुर्ग की दीवाल का एक हिस्सा टूटा और यूनानियों की सेना उसी भग्न मार्ग से जयनाद करती हुई घुसने लगी। पर वह उसी समय पहाड़ से टकराये हुए समुद्र की तरह फिरा दी गयी, और भारतीय युवक वीरों की सेना उनका पीछा करती हुई दिखाई पड़ने लगी। सिकंदर उनके प्रचण्ड अश्वघात को रोकता पीछे हटने लगा। अफगानिस्तान में अश्वक वीरों के साथ भारतीय वीर कहाँ से आ गये? यह शंका हो सकती है, किन्तु पाठकगण! ये निमन्त्रित होकर उनकी रक्षा के लिए सुदूर से आये हैं, जो कि संख्या में केवल सात हजार होने पर भी ग्रीकों की असंख्य सेना को बराबर पराजित कर रहे हैं।

सिंकदर के उस सामान्य दुर्ग के अवरोध में तीन दिन व्यतीत हो गये। विजय की संभावना नहीं है, सिंगदर उदास होकर कैम्प में लौट गया, और सोचने लगा। सोचने की बात ही है। गाजा और परसिपोलिस आदि के विजेता को अफगानिस्तान के एक छोटे-से दुर्ग के जीतने में इतना परिश्रम उठाकर भी सफलता मिलती नहीं दिखाई देती, उलटे कई बार उसे अपमानित होना पड़ा।

बैठे-बैठे सिकंदर को बहुत

देर हो गयी। अन्धकार फैलकर संसार को छिपाने लगा, जैसे कोई कपटाचारी अपनी मन्त्रणा को छिपाता हो। केवल कभी-कभी दो-एक उल्लू उस भीषण रणभूमि में अपने भयावह शब्द को सुना देते हैं। सिकंदर ने सीटी देकर कुछ इंगित किया, एक वीर पुरूष सामने दिखाई पड़ा। सिकंदर ने उससे कुछ गुप्त बातें कीं, और वह चला गया। अन्धकार घनीभूत हो जाने पर सिंगदर भी उसी ओर उठकर चला, जिधर वह पहला सैनिक जा चुका था। दुर्ग के उस भाग में, जो टूट चुका था, जो बहुत शीघ्र कल की लड़ाई के लिए प्रस्तुत कर दिया गया और सब लोग विश्राम करने के लिये चले गये। केवल एक मनुष्य उसी स्थान पर प्रकाश डालकर कुछ देख रहा है। वह मनुष्य कभी तो खड़ा रहता है और कभी अपनी प्रकाश फैलानेवाली मशाल को लिये हुए दूसरी ओर चला जाता है। उस समय उस घोर अन्धकार में उस भयावह दुर्ग की प्रकाण्ड छाया और भी स्पष्ट हो जाती है। उसी छाया में छिपा हुआ सिकंदर खड़ा है। उसके हाथ में धनुष और बाण है, उसके सब अस्त्र उसके पास हैं। उसका मुख यदि कोई इस समय प्रकाश में देखता, तो अवश्य कहता कि यह कोई बड़ी भयानक बात सोच रहा है, क्योंकि उसका सुन्दर मुखमण्डल इस समय विचित्र भावों से भरा है। अकस्मात उसके मुख से एक प्रसन्नता का चीत्कार निकल पड़ा, जिसे उसने बहुत व्यग्र होकर छिपाया। समीप की झाड़ी से एक दूसरा मनुष्य निकल पड़ा, जिसने आकर सिकंदर से कहा- देर न कीजिए, क्योंकि यह वही है।

सिकंदर ने धनुष को ठीक करके एक विषमय बाण उस पर छोड़ा और उसे उसी दुर्ग पर टहलते हुए मनुष्य की ओर लक्ष्य करके छोड़ा। लक्ष्य ठीक था, वह मनुष्य लुढ़ककर नीचे आ रहा। सिकंदर और उसके साथी ने झट जाकर उसे उठा लिया, किन्तु उसके चित्कार से दुर्ग पर का एक प्रहरी झुककर देखने लगा। उसने प्रकाश डालकर पूछा कौन है?

उत्तर मिला- मैं दुर्ग से नीचे गिर पड़ा हूँ।

प्रहरी ने कहा घबराइये मत, मैं डोरी लटकाता हूँ।

डोरी बहुत जल्द लटका दी गयी, अफगान वेशधारी सिकंदर उसके सहारे ऊपर चढ़ गया। ऊपर जाकर सिकंदर ने उस प्रहरी को भी नीचे गिरा दिया, जिसे उसके साथी ने मार डाला और उसका वेश आप लेकर उस सीढ़ी से ऊपर चढ़ गया। जाने के पहले उसने अपनी छोटी-सी सेना को भी उसी जगह बुला लिया और धीरे-धीरे उसी रस्सी की सीढ़ी से वे सब ऊपर पहुँचा दिये गये।

दुर्ग के प्रकोष्ठ में सरदार की सुन्दर पत्नी बैठी हुई है। मदिरा-विलोल दृष्टि से कभी दर्पण में अपना सुन्दर मुख और कभी अपने नवीन नील वसन को देख रही है। उसका मुख लालसा की आँखों में चकाचौंध पैदा कर रहा है। अकस्मात प्यारे सरदार, कहकर वह चौंक पड़ी, पर उसकी प्रसन्नता उसी क्षण बदल गयी, जब उसने सरदार के वेश में दूसरे को देखा। सिकंदर का मानुषिक सौन्दर्य कुछ कम नहीं थी, अबला-हृदय को और भी दुर्बल बना देने के लिये वह पर्याप्त था। वे एक-दूसरे को निर्निमेष दृष्टि से देखने लगे, पर अफगान-रमणी की शिथिलता देर तक न रही, उसने हृदय के सारे बल को एकत्र करके पूछा तुम कौन हो?

उत्तर मिला- शाहंशाह सिकंदर।

रमनी ने पूछा- यह वस्त्र किस तरह मिला।

सिकंदर ने कहा- सरदार को मार डालने से।

रमणी के मुख से चीत्कार के साथ ही निकल पड़ा था- क्या सरदार मारा गया?

सिकंदर- हाँ, अब वह इस लोक में नहीं है।

रमणी ने अपना मुख दोनों हाथों से ढक लिया, पर उसी क्षण उसके हाथ में एक चमकता हुआ छुरा दिखाई देने लगा।

सिकंदर घुटने के बल बैठ गया और बोला- सुन्दरी! एक जीव के लिये तुम्हारी दो तलवारें बहुत

थीं, फिर तीसरी की क्या आवश्यकता है?

रमणी की दृढ़ता हट गयी, और न जाने क्यों उसके हाथ का छुरा छटककर गिर पड़ा, वह भी घुटनों के बल बैठ गयी।

सिकंदर ने उसका हाथ पकड़कर उठाया। अब उसने देखा कि सिकंदर अकेला नहीं हैं, उसके बहुत से सैनिक दुर्ग पर दिखाई दे रहे हैं। रमणी ने अपना हृदय दृढ़ किया और संदूक खोलकर एक जवाहिरात का डिब्बा ले आकर सिकंदर के आगे रक्खा। सिकंदर ने उसे देखकर कहा- मुझे इसकी आवश्यकता नहीं है, दुर्ग पर मेरा अधिकार हो गया, इतना ही बहुत है।

दुर्ग के सिपाही यह देखकर कि शत्रु भीतर आ गया है, अस्त्र लेकर मारपीट करने पर तैयार हो गये। पर सरदार-पत्नी ने उन्हें मना किया, क्योंकि उसे बतला दिया गया था कि सिकंदर की विजयवाहिनी दुर्ग के द्वार पर खड़ी है।

सिकंदर ने कहा- तुम घबडाओ मत, जिस तरह से तुम्हारी इच्छा होगी, उसी प्रकार सन्धि के नियम बनाये जायेंगे। अच्छा, मैं जाता हूँ।

अब सिकंदर को थोड़ी दूर तक सरदार-पत्नी पहुँचा गयी। सिंकदर थोड़ी सेना छोड़कर आप अपने शिविर में चला गया।

सन्धि हो गयी। सरदार-पत्नी ने स्वीकार कर लिया कि दुर्ग सिकंदर के अधीन होगा। सिकंदर ने भी उसी को यहाँ की रानी बनाया और कहा- भारतीय योद्धा जो तुम्हारे यहाँ आये हैं, वे अपने देश को लौटकर चले जायँ। मैं उनके जाने में किसी प्रकार की बाधा न डालूंगा। सब बातें शपथपूर्वक स्वीकार कर ली गयीं।

राजपूत वीर अपने परिवार के साथ उस दुर्ग से निकल पड़े, स्वदेश की ओर चलने के लिए तैयार हुए। दुर्ग के समीप ही एक पहाड़ी पर उन्होंने अपना डेरा जमाया और भोजन करने का प्रबंध करने लगे।

भारतीय रमणियाँ जब अपने प्यारे पुत्रों और पतियों के लिए

भोजन प्रस्तुत कर रही थीं, तो उनमें उस अफगान-रमणी के बारे में बहुत बातें हो रही थीं, और वे सब उसे बड़ी घृणा की दृष्टि से देखने लगीं, क्योंकि उसने एक पति-हत्याकारी को आत्म-समर्पण कर दिया था। भोजन के उपरांत जब सब सैनिक विश्राम करने लगे तब युद्ध की बातें कहकर अपने चित्त को प्रसन्न करने लगे। थोड़ी देर नहीं बीती थी कि एक ग्रीक अश्वारोही उनके समीप आता दिखाई पड़ा, जिसे देखकर एक राजपूत युवक उठ खड़ा हुआ और उसकी प्रतीक्षा करने लगा।

ग्रीक सैनिक उसके समीप आकर बोला- शाहंशाह सिकंदर ने तुम लोगों को दया करके अपनी सेना में भरती करने का विचार किया है। आशा है कि इस सम्वाद से तुम लोग बहुत प्रसन्न होंगे।

युवक बोल उठा- इस दया के लिए हम लोग कृतज्ञ हैं, पर अपने भाइयों पर अत्याचार करने में ग्रीकों का साथ देने के लिए हम लोग कभी प्रस्तुत नहीं हैं। ग्रीक- तुम्हें प्रस्तुत होना चाहिये, क्योंकि शाहंशाह सिकंदर की आज्ञा है।

युवक - नहीं महाशय, क्षमा कीजिये। हम लोग आशा करते हैं कि सन्धि के अनुसार हम लोग अपने देश को शान्तिपूर्वक लौट जायेंगे, इसमें बाधा न डाली जायगी।

ग्रीक- क्या तुम लोग इस बात पर दृढ़ हो? एक बार और विचार कर उत्तर दो, क्योंकि उसी उत्तर पर तुम लोगों का जीवन-मरण निर्भर होगा।

इस पर कुछ राजपूतों ने समवेत स्वर से कहा- हाँ, हाँ हम अपनी बात पर दृढ़ हैं, किन्तु सिकंदर, जिसने देवताओं के नाम से शपथ ली है, अपनी शपथ को न भूलेगा।

ग्रीक- सिकंदर ऐसा मूर्ख नहीं है कि आये हुए शत्रुओं को और दृढ़ होने का अवसर दे। अस्तु, अब तुम लोग मरने को तैयार हो। इतना कहकर वह ग्रीक अपने घोड़े को घुकाकर सीटी बजाने लगा, जिसे सुनकर अगणित ग्रीक-सेना उन थोड़े से हिन्दुओं पर टूट पड़ी। इतिहास इस बात का साक्षी है कि उन्होंने प्राण-प्रण से युद्ध किया

और जब तक कि उनमें एक भी बचा, बराबर लड़ता गया। क्यों न हो, जब उनकी प्यारी स्त्रियाँ उन्हें अस्त्रहीन देखकर तलवार देती थीं और हँसती हुई अपने प्यारे पतियों की युद्ध क्रिया देखती थीं। रणचण्डियाँ भी अकर्मण्य न रहीं, जीवन देकर अपना धर्म रखा। ग्रीकों की तलवारों ने उनके बच्चों को भी रोने न दिया, क्योंकि पिशाच सैनिकों के हाथ सभी मारे गये।

अज्ञात स्थान में निराश्रय होकर उन सब वीरों ने प्राण दिये। भारतीय लोग उनका नाम भी नहीं जानते।

****

हीरे का हीरा

चंद्रधर शर्मा गुलेरी

आज सबेरे ही से गुलाबदेई काम में लगी हुई है। उसने अपने मिट्टी के घर के आँगन को गोबर से लीपा है, उस पर पीसे हुए चावल से मंडर माँडे हैं। घर की देहली पर उसी चावल के आटे से लीकें खैंची हैं और उन पर अक्षत और बिल्वपत्र रखे हैं। दूब की नौ डालियाँ चुन कर उनसे लाल डोरा बाँध कर उसकी कुलदेवी बनाई है और हर एक पत्ते के दूने में चावल भर कर उसे अंदर के घर में, भींत के सहारे एक कड़ी के देहरे में रखा है। कल पड़ोसी से माँग कर गुलाबी रंग लाई थी उससे रंगी हुई चादर बिचारी को आज नसीब हुई है। लठिया टेकती हुइ बुढ़िया माता की आँखें यदि तीन वर्ष की कंगाली और पुत्र वियोग से और डेढ़ वर्ष की बीमारी की दुखिया के कुछ आँखें और उनमें ज्योति बाकी रही हो तो दरवाजे पर लगी हुई हैं। तीन वर्ष के पतिवियोग और दारिद्रय की प्रबल छाया से रात-दिन के रोने से पथराई और सफेद हुई गुलाबदेई की आँखों पर आज फिर यौवन की ज्योति और हर्ष के लाल डोरे आ गए हैं और सात वर्ष का बालक हीरा, जिसका एकमात्र वस्त्र कुरता खार से धो कर कल ही उजाला कर दिया गया है, कल ही से पड़ोसियों से कहता फिर रहा है कि मेरा चाचा

आवेगा। बाहर खेतों के पास लकड़ी की धमाधम सुनाई पड़ने लगी। जान पड़ता है कि कोई लंगड़ा आदमी चला आ रहा है जिसके एक लकड़ी की टाँग है। दस महीने पहले एक चिट्टी आई थी, जिसे पास के गाँव के पटवारी ने पढ़ कर गुलाबदेई और उसकी सास को सुनाया था। उसमें लिखा था कि लहनासिंह की टाँग चीन की लड़ाई में घायल हो गई है और हांगकांग के अस्पताल में उसकी टाँग काट दी गई है। माता के वात्सल्यमय और पत्नी के प्रेममय हृदय पर इसका प्रभाव ऐसा पड़ा कि बेचारियों ने चार दिन रोटी नहीं खाई थी। तो भी अपने ऊपर सत्य आपत्ति आती हुई और आई हुई जान कर भी हम लोग कैसे आँखें मींच लेते हैं और आशा की कच्ची जाली में अपने को छिपा कर कवच से ढका हुआ समझते हैं। वे कभी-कभी आशा किया करती थीं कि दोनों पैर सही सलामत ले कर लहनासिंह घर आ जाए तो कैसा। और माता अपनी बीमारी से उठते ही पीपल के नीचे के नाग के यहाँ पंच पकवान चढ़ाने गई थी कि नाग बाबा मेरा बेटा दोनों पैरों चलता हुआ राजी-खुशी मेरे पास आवे। उसी दिन लौटते हुए उसे एक सफेद नाग भी दीखा था, जिससे उसे आशा हुई थी कि मेरी प्रार्थना सुन ली गई। पहले पहले तो सुखदेई को ज्वर की बेचैनी में पति की टाँग- कभी दाई और कभी बाँई- किसी दिन कमर के पास से और किसी दिन पिंडली के पास से और फिर कभी टखने के पास से कटी हुई दिखई देती परंतु फिर जब उसे साधारण स्वप्न आने लगे तो वह अपने पति को दोनों जाँघों पर खड़ा देखने लगी। उसे यह न जान पड़ा कि मेरे स्वस्थ मस्तिष्क की स्वस्थ स्मृति को अपने पति का यही रूप याद है जो सदा देखा है, परंतु वह समझी की किसी करामात से दोनों पैर चंगे हो गए हैं।

किन्तु अब उनकी अविचारित रमणीय कल्पनाओं के बादलों को मिटा देने वाला वह भयंकर सत्य लकड़ी का शब्द आने लगा जिसने उनके हृदय को दहला

दिया। लकड़ी की टाँग की प्रत्येक खटखट मानो उनकी छाती पर हो रही थी और ज्यों-ज्यों वह आहट पास आती जा रही थी त्यों-त्यों उसी प्रेमपात्र के मिलने के लिए उन्हें अनिच्छा और डर मालूम होते जाते थे कि जिसकी प्रतीक्षा में उसने तीन वर्ष कौए उछ़ाते और पल-पल गिनते काटे थे प्रत्युत वे अपने हृदय के किसी अंदरी होने में यह भी इच्छा करने लगी कि जितने पल विलंब से उससे मिलें उतना ही अच्छा, और मन की भित्ति पर वे दो जाँघों वाले लहनासिंह की आदर्श मूर्ति को चित्रित करने जगी और उसे अब फिर कभी न दिख सकने वाले दुर्लभ चित्र में इतनी लीन हो गई कि एक टाँग वाला सच्चा जीता जागता लहनासिंह आँगन में आ कर खड़ा हो गया और उसके इस हँसते हुए वाक्यों से उनकी वह व्यामोहनिद्रा खुली कि- अम्मा, क्या अंबाले की छावनी से मैंने जो चिट्ठी लिखवाई थी वह नहीं पहुँची? माता ने झटपट दिया जलाया और सुखदेई मुँह पर घूंघट ले कर कलश ले कर अंदर के घर की दहनी द्वार साख पर खड़ी हो गई। लहनासिंह ने भीतर जा कर देहरे के सामने सिर नवाया और अपनी पीट पर की गठरी एक कोने में रख दी। उसने माता के पैर हाथों से छू कर हाथ्र सिर को लगाया और माता ने उसके सिर को अपनी छाती के पास ले कर उस मुख को आँसुओं की वर्षा से धो दिया जिस पर बाक्तारों की गोलियों की वर्षा के चिह्न कम से कम तीन जगह स्पष्ट दिख रहे थे।

अब माता उसको देख सकी। चेहरे पर दाढ़ी बढ़ी हुई थी और उसके बीच-बीच में तीन घावों के खड्डे थे। बालकपन में जहाँ सूर्य, चंद्र, मंगल आदि ग्रहों की कुदृष्टि को बचाने वाला तांबे चाँदी की पतड़ियों और मूँगे आदि का कठला था वहाँ अब लाल फीते से चार चाँदी के गोल-गोल तमगे लटक रहे थे और जिन टाँगों ने बालकपन में माता की रजाई को पचास-पचास दफा उघाड़ दिया उनमें से एक की जगह चमड़े के

तसमों से बंधा हुआ डंडा था। धूप से स्याह पड़े हुए और मेहनत से कुम्हलाए हुए मुख पर और महीनों तक खटिया सेने की थकावट से पिलाई हुई आँखों पर भी एक प्रकार की, स्वावलंबन की ज्योति थी जो अपने पिता, पितामह के घर और उनके पितामहों के गाँव को फिर देख कर खिलने लगती थी ।

माता रूँधे हुए गले से न कुछ कह सकी और न कुछ पूछ सकी। चुपचाप उठ कर कुछ सोच-समझ कर बाहर चली गई। गुलाबदेई जिसके सारे अंग में बिजली की धाराएँ दौड़ रही थीं और जिसके नेत्र पलकों को धकेल देते थे इस बात की प्रतीक्षा न कर सकी कि पति की खुली हुई बाँहें उसे समेट कर प्राणनाथ के हृदय से लगा लें किन्तु उसके पहले ही उसका सिर जो विषाद के अंत और नवसुख के आरंभ से चकरा गया था पति की छाती पर गिर गया और हिन्दुस्तान की स्त्रियों के एकमात्र हाव-भाव- अश्रु के द्वारा उनकी तीन वर्ष की कैद हुई मनोवेदना बहने लगी।

वह रोती गई और रोती गई। क्या यह आश्चर्य की बात है? जहाँ की स्त्रियाँ पत्र लिखना-पढ़ना नहीं जानतीं और शुद्ध भाषा में अपने भाव नहीं प्रकट कर सकती और जहाँ उन्हें पति से बात करने का समय भी चोरी से ही मिलता है वहाँ नित्य अविनाशी प्रेम का प्रवाह क्यों नहीं अश्रुओं की धारा की भाषा में.... (गुलेरी जी इस कहानी को यहीं तक लिख पाए थे। आगे की कहानी कथाकार डॉ. सुशील कुमार फुल्ल ने पूरी की है)..... उमड़ेगा। प्रेम का अमर नाम आनंद है। इसकी बेल जन्म-जन्मातंर तक चलती है। गुलाबदेई को तीन वर्ष के बाद पति-स्पर्श का एहसास मिला था। पहले तो वह लाजवंती सी छुईमुई हुई, फिर वह फूली हुई बनिए की लड़की सी पति में ही धसती चली गई। पहाड़ी नदी के बाँध टूटना ही चाहते थे कि लहनासिंह लड़खड़ा गया और गिरते-गिरते बचा। सकुचायी-सी शर्मायी-सी गुलाबदेई ने लहनासिंह को चिकुटी काटते

हुए कहा - बस..... और आँखों ही आँखों में बिहारी की नायिका के समान भरे मान में मानो कहा- कबाड़ी के सामने भी कोई लहँगा पसारेगी ?

हारे को हरिनाम, गुलाबदेई। मेरी प्राणप्यारी। मैं हारा नहीं हूँ। सुनो..... मर्द और कर्द कभी खुन्ने नहीं होते गुलाबो.... और चीन की लड़ाई ने तो मेरी धार और तेज कर दी है। लहनासिंह तन कर खड़ा हो गया था। गुलाबदेई सरसों-सी खिल आई। मानो लहनासिंह उसे कल ही ब्याह कर लाया हो।

माँ रसोई करने चली गई थी। तीन साल बाद बेटा आया था। उसके कानों में बैसाखियों की खडखड़ाहट अब भी सुनाई दे रही थी। भगवती से कितनी मन्नतें मानी थीं। वह शिवजी के मंदिर में भी हो आई थी। आखिर देवी-देवता चाहें तो वह सही सलामत भी आ सकता था परंतु अब तो वह साक्षात सामने था। फिर भी माँ को किसी चमत्कार की आशा थी, वह सीडं बाबा से पुच्छ लेने जाएगी। फिर देगची में कडछी हिलाते हुए सोचने लगी..... देश के लिए एक टाँग गँवा दी तो क्या हुआ। उसकी छाती फूल गई। बेटे ने माँ के दूध की लाज रखी थी।

चाचा, तुम आ गए।

हाँ बेटा। लहनासिंह ने उसे अंक में भरते हुए कहा।

चाचा.... इतने दिन कहाँ थे ?

बेटा मैं लाभ पर था। चीन से युद्ध हो रहा था न.....

चीन कहाँ है? मासूमियत से बालक ने पूछा।

हिमालय के उस पार।

मुझे भी ले चलोगे न ?

अब मैं नहीं जाउंगा। फौज से मेरी छुट्टी हो गई। कुछ सोच कर उसने फिर कहा- बेटा, तुम बड़े हो जाओगे तो फौज में भर्ती हो जाना।

मैं भी चीनियों को मार गिराऊंगा। लेकिन चाचा क्या मेरी भी टाँग कट जाएगी।

धत तेरी। ऐसा नहीं बोलते। टाँग कटे दुश्मनों की। फिर हीरे ने जेब में आम की गुठली से बनाई पीपनी निकाली और बजाने लगा।

बरसात तें आम की गुठलियाँ उग आती हैं, तो बच्चे उस पौधों को उखाड़ कर गुठली में से गिट्टक निकाल कर बजाने लगते हैं। बड़े-बूढ़े खौफ दिखाते हैं कि गुठलियों में साँप के बच्चे होते हैं परंतु इन बंदरों को कौन समझाए..... आदमी के पूर्वज जो ठहरे।

तुम मदरसे जाते हो ?

हूँ.... लेकिन मौलवी की लंबी दाढी से डर लगता है.....

क्यों ?

दाढ़ी में उसका मुँह ही दिखाई नहीं देता.....

तुम्हें मुँह से क्या लेना है। अच्छे बच्चे गुरूओं के बारे में ऐसी बात नहीं करते।

मेरा नाम तो अभी कच्चा है.....

नाम कच्चा है या कच्ची में ही.....

मैं पक्की में जो जाऊंगा लेकिन बड़ी माँ ने अधन्नी नहीं दी.... फीस लगती है चाचा। और वह पीपनी बजाता हुआ गायब हो गया।

लहनासिंह सोचने लगा.... उमर कैसे ढल जाती है... पहाड़ी नदी-नाले मैदान तक पहुँचते-पहुँचते संयत हो जाते हैं... ढलती हुई उमर में वर्तमान के खिसकने और भविष्य के अनिश्चय घेर लेते हैं। चीन की लड़ाई में जख्मी होने पर जब अस्पताल में था... तो हर नर्स उसे आठ-नौ साल की सूबेदारनी दिखाई देती..... सिस्टर नैन्सी से एक दिन उसने पूछा भी था सिस्टर क्या कभी तुम आठ साल की थी ?

अरे बिना आठ की उमर पार किए मैं बाईस की कैसे हो सकती हूँ.... तुम्हें कोई याद आ रहा है....

हाँ... वह आठ साल की छोकरी.....दही में नहाई हुई.... बहार के फूलों-सी मुस्कराती हुई मेरी जिंदगी में आई थी.... और फिर एकाएक बिलुप्त हो गई.... सुबेदारनी बन गई.... कहते-कहते वह खो गया था।

हवलदार... तुम परी-कथाओं में विश्वास रखते हो ?

परियों के पंख होते हैं न .... वे उड़ कर जहाँ चाहें चली जाएँ..... कल्पना ही तो जीवन है।

परंतु तुम्हें तो शौर्य मेडल मिला है।

अगर मेरी कल्पना में वह आठ वर्षीय कन्या न होती तो मुझे कभी शौर्य मेडल न मिलता..... मेरी प्रेरणा वही थी..... तुमने विवाह नहीं बनाया। नैन्सी ने पूछा।

विवाह तो बनाया.... कनेर के फूल-सी लहलहाती मेरी पत्नी है... एक बेटा है..... और मेरी बूढ़ी माँ है.....

तो फिर परियों की कल्पना.... आठ वर्ष की कन्या का ध्यान.....

हाँ, सिस्टर..... मैंने 35 साल पहले उस कन्या को देखा था..... फिर वह ऐसे गायब हुई जैसे कुरली बरसात के बाद कही अवश्य हो जाती है..... और मैं निपट.... अकेला.... नैन्सी चली गई थी। वह सोचता रहा था- स्वप्न में सफेद कौओं का दिखाई देना शुभ लक्षण है या अशुभ का प्रतीक....अस्पताल में अर्ध निमीलित आँखों में अनेक देवता आते.... कभी उसे लगता कि फनियर नाग ने उसे कमर से कर लिया है.... शायद वह नपुंसकता का संकेत न हो.... वह दहल जाता.... माँ....पत्नी.... और हीरा.... कैसे होंगे.... गाँव में वैसे तो ऐसा कुछ नहीं जो भय पैदा करे..... लेकिन तीन साल तो बहुत होते हैं.... वे कैसे रहती होंगी... युद्ध में तो तनख्वाह भी नहीं पहुंचती होगी.... फिर उसे ध्यान आया कि जब वह चलने लगा था तो माँ ने कहा था बेटा.... हमारी चिंता नहीं करना। आँगन में पहाडिए का बास हमारी रक्षा करेगा.... फिर उसे ध्यान आया..... कई बार पहाडिया नाराज हो जाए तो घर को उलटा-पुलटा कर देता है। आप चावल की बोरी को रखें...वह अचानक खुल जाएगी और चावलों का ढेर लग जाएगा। कभी पहाडिया पशुओं को खोल देगा.... अरे नहीं... पहाडिया तो देवता होता है, जो घर-परिवार की रक्षा करता है। वह आश्वस्त हो गया था।

मुन्नूआ, तू कुथी चला गिया था?

माँ फौजी तो हुक्म का गुलाम ओता है।

फिरकू तो जर्मन की लड़ाई से वापस आ गया था.... उसका तो कई अंग-भंग वी नई हुआ था.... और तू पता नहीं कहाँ-कहाँ भटकता रहा.... तिझो घरे दी वी याद नी आई।

अम्मा... फिरकू तो फिरकी की भांति घूम गया होगा लेकिन मैं तो वीर माँ का सपूत हूँ.... उस पहाडी माँ का जो स्वयं बेटे को युद्धभूमि में तिलक लगा कर भेजती है... बहाना बना कर लौटना राजपूत को शोभा नहीं देता हाँ, सो तो तमगे से देख रेई हूँ लेकिन....

लेकिन क्या अम्मा... तुम चुप क्यों हो गई।

गुलाबदेई तो वीरांगना है.... उसे तो गर्व होना चाहिए...

हाँ.... बेटा.... फौजी की औरत तो तमगों के सहारे ही जीती है लेकिन....

लेकिन क्या अम्मा.... कुछ तो बोलो।

उसका हाल तो बेहाल रहा.... आदमी के बिना औरत अधूरी है..... और फौजी की औरत पर तो कितणी उँगलियाँ उठती हैं.... तुम क्या जानो। तुम तो नौल के नौलाई रेअ। हूँ !

क्या तमगे तुम्हारी दूसरी टाँग ला सकते हैं? और तीन साल से सरकार ने सुध-बुध ही कहाँ ली...लहनासिंह के पास कोई जवाब नहीं था। सुबेदारनी ने उसे किस अनुनय-विनय से बीध लिया था.... हजारासिंह बोधा सिंह की रक्षा करते उसने कौन सा मोर्चा मार लिया था.... वह युद्ध-भूमि में तड़प रहा था और रेड-क्रास वैन बाप-बेटे को ले कर चली गई थी.... उसने जो कहा था मैंने कर दिया.... सोच कर फूल उठा लेकिन गुलाबदेई के यौवन का अंधड कैसे निकला होगा... लोग कहते होंगे.... बरसाती नाले सा अंधड़ आया और वह झरबेरी सी बिछ गई थी... तूफान में दबी... सहमी सी लँगड़े खरगोश-सी ... नहीं... लँगड़ी वह कहाँ है... लँगड़ा तो लहनासिंह आया है..... चीन में नैन्सी से बतियाता...

खिलखिलाता....

अम्मा फिर रसोई में चली गई थी। गुलाबदेई उसकी लकड़ी की टाँग को सहला रही थी... शायद उसमें स्पंदन पैदा हो जाए... शायद वह फिर दहाड़ने लगे... तभी लहनासिंह ने कहा था, गुलाबो...यह नहीं दूसरी टाँग....

वह दोनों टाँगों को दबाने लगी थी... और अश्रुधारा उसके मुख को धो रही थी.... वह फिर बोला- गुलाबो.... तुम्हें मेरे अपंग होने का दुख है ?

नहीं तो।

फिर रो क्यों रही हो .....

फौजी की बीबी रोए तो भी लोग हँसते हैं और अगर हँसे तो भी व्यंग्य बाण छोड़ते है.... वह तो जैसे लावारिस औरत हो... वह फूट पड़ी थी।

मैं तो सदा तुम्हाने पास था।

अच्छा, अब जरा वह खिलखिलाई। हीरे का हीरा पा कर भी तुम बेबस रहीं।

और तुम्हारे पास क्या था?

तुम!

नहीं.... कोई मीम तुम्हें सुलाती होगी.... और तुम मोम से पिछल जाते होओगे... मर्द होते ही ऐसे हैं।

जरा खुल कर कहो न...

गोरी-चिट्टी मीम देखी नहीं की लट्टू हो गए.....

तुम्हें शंका है ?

हूँ.... तभी तो इतने साल सुध नहीं ली.....

मैं तो तुम्हारे पास था हमेशा..... हमेशा.....

और वह सूबेदारनी कौन थी ?

क्या मतलब ?

तुम अब भी माँ से कह रहे थे... उसने कहा था.... जो कहा था.... मैंने पूरा कर दिया....

हाँ.... में जो कर सकता था... वह कर दिया...

लेकिन सूबेदारनी युद्ध में कहाँ से आ गई ?

वह कल्पना थी।

तो क्या गुलाबो मर गई थी.... मैं कल्पना में भी याद नहीं आई।

मैं तुम्हें उसे मिलाने ले चलूँगा।

हूँ.... मिलोगे खुद और बहाना मेरा.....

फौजिया तुद घरे नी औणा था!

मैं अब चला जाता हूँ....

मेरे लिए तो तुम कब के जा चुके थे....

और आ कर भी कहाँ आ पाए....

गुलाबो.... तुम भूल कर रही हो..... मैंने कहा था न.... मर्द और कर्द कभी खुन्ने नहीं होते..... उन्हें चलाना आना चाहिए....

अच्छा....अच्छा... छोड़ो भी न अब.....हीरा आ जाएगा....

और दोनों ओबरी में चले गए।

सदियों बाद जो मिले थे। छोटे छोटे सुख मनोमालिन्य को धो डालते हैं और एक-दूसरे के प्रति आश्वस्ति जीवन का आधार बनाती है-एक मृगतृष्णा का पालन दांपत्य-जीवन को हरा-भरा बना देता है.... गुलाबदेई लहलहाने लगी थी.... और आँगन में अचानक धूप खिल आई थी।

****

शारदा और मोर

सूर्यकांत त्रिपाठी "निराला"

शारदा देवताओं की रानी थीं। वैसी रूपवती दूसरी देवी नहीं थी। उनकी प्यारी चिड़िया मोर था। खुशनुमा परों और भारी-भरकम आकार के कारण वह देवताओं की रानी सरस्वती का वाहन होने लायक था।

कुछ हो, एक दिन मोर ने मन में सोचा, मेरे साथ बड़ा बुरा बर्ताव किया गया है। मुझे वैसी अच्छी आवाज नहीं दी गई जैसे कोयल को, नहीं तो रूप के अनुरूप ही मेरा स्वर होता। उसने शारदा से कोयल की- सी आवाज माँगी।

देवी ने उसकी विनय पर यह उत्तर दिया- हर चिड़िया को उसके योग्य दान मिला है। कोयल काली और सीधी चिड़िया है। उसको मधुर स्वर मिला। तुम्हारी आवाज तीखी और दिल को वैसी लुभाने वाली नहीं, मगर तुम्हारे **पर** इतने सुन्दर हैं कि देखकर दूसरों को जलन होती है। तुम्हें जो कुछ मिला है, उसके लिए कृतज्ञ

रहो। जो तुम्हें नहीं मिल सकता, उसके लिए हाथ न बढ़ाओ। अपने भाग्य से संतोष रखना सीखो।

****

देना सीखें

(बोध कथा)

एक बादशाह ने अपने राज्य में घोषणा करवाई कि उसके राज्य के हर जरूरतमंद व्यक्ति की जरूरत पूरी की जाएगी। अगले दिन उसके राजमहल के बाहर लोगों की भीड़ जमा होने लगी। सभी लोग कतार में खड़े होने लगे। एक फकीर था, जो चुपचाप कतार के अंत में जाकर खड़ा हो गया। कुछ देर बाद एक व्यक्ति और आया और वह फकीर के पीछे खड़ा हो गया। फकीर ने अपना स्थान छोड़कर उसको दे दिया और वह सबसे पीछे जाकर खड़ा हो गया। फिर कोई व्यक्ति आया और फिर फकीर ने अपना स्थान उस व्यक्ति को दे दिया और वह सबसे पीछे जाकर खड़ा हो गया। संध्या होने तक यही सिलसिला चलता रहा और इधर राजा अपना खजाना बांटता रहा। जब आखरी में उसका नंबर आया तब राजा ने उससे पूछा- " हे फकीर, यदि मेरा सारा खजाना समाप्त हो जाता तो तुम्हें तो कुछ भी नहीं मिलता, लेकिन तुमने उसकी चिंता न करके दूसरे लोगों को आगे क्यों किया" ?

उसने बोला- " महाराज, आप बहुत किस्मत वाले हैं । परमात्मा की आप पर बड़ी कृपा है कि आप के पास देने को इतना सब कुछ है । मैं फकीर हूँ । मैं कुछ रखता ही नहीं हूँ तो मेरे पास देने को कुछ नहीं था, लेकिन हां एक अवसर अवश्य था जो कि आपने मुझको दिया था। जो मैं किसी को दे सकता था। इसलिए मैंने वह अवसर अन्य लोगों को दे दिया।" राजा उसकी उदारता और सहृदयता से प्रभावित हुआ। उसने उसका बहुत आदर-सत्कार किया और उसकी पूरी झोली भर कर उसे शाही सम्मान के साथ विदा किया।

सीख : ऐसा कोई अवसर नहीं गंवाना चाहिए, जहां हम कुछ बांट

सकें। हम किसी को कुछ दे सकें, हम जितना बांटेंगे, वह अनंत गुना होकर वापस आ जाएगा। पुण्य किए जाओ। परमार्थ किए जाओ, फल की चिंता मत करो, वह तो आना पक्का है।

****

विद्वान व राजा भाई-भाई

(ज्ञान कथा)

कई वर्ष पहले धार में राजा भोज का शासन था। उस राज्य में एक गरीब विद्वान रहता था। आर्थिक तंगी से घबराकर एक दिन विद्वान की पत्नी ने उससे कहा- आप राजा भोज के पास क्यों नहीं जाते? वह विद्वानों का बड़ा आदर करते हैं, हो सकता है आपकी विद्वत्ता से प्रभावित होकर आपको ढेर सारा धन दे दें।

दूसरे दिन विद्वान राजा के दरबार में पहुंचा। पहरेदार ने पूंछा- आप कौन हैं? कहां जाना है? विद्वान ने कहा- जाओ राजा से कहो कि उनका भाई आया है। फहरेदार ने जब राजा भोज को यह बात बताई तो वह सोचने लगे- " मेरा तो कोई भाई है ही नहीं, फिर कौन हो सकता है? कहीं कोई धूर्त तो नहीं है। " उनकी उत्सुकता जागी। उन्होंने विद्वान को बुलवा लिया।

कैसे हुए भाई-भाई। भोज ने विद्वान से पूछा- क्या तुम मेरे भाई हो? किस नाते से? विद्वान ने कहा- मैं आपका मौसेरा भाई हूँ । आपकी मौसी का लड़का। भोज ने पूछा, कैसे ? मेरी तो कोई मौसी नहीं है।

विद्वान बोला- महाराज, आप संपत्ति माता के पुत्र हैं और मैं विपत्ति माता का पुत्र। संपत्ति और विपत्ति बहनें हैं। इस नाते मैं आपका मौसेरा भाई हुआ न। यह सुनकर भोज बेहद प्रसन्न हुए। उन्होंने ढेर सारी स्वर्ण मुद्राएं विद्वान को दीं।

फिर भोज ने पूछा- मेरी मौसी तो कुशल है न ? इस पर राजा ने जवाब दिया- राजन जब तक आपकी मौसी जीवित थी, आपके दर्शन नहीं हुए थे । अब आपके दर्शन हुए तो आपकी मौसी

स्वर्ग सिधार गई । इस उत्तर से भोज को और भी प्रसन्नता हुई । उन्होंने विद्वान को गले से लगा लिया।

****

वेकोलि समाचार

वेकोलि में राजभाषा हिंदी का उपयोग बढ़ाने पर जोर

वेस्टर्न कोलफील्ड्स लिमिटेड (वेकोलि) में राजभाषा हिंदी का अधिकाधिक उपयोग करने पर जोर दिया गया। पिछले दिन कम्पनी स्तरीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक श्री राजीव रंजन मिश्र की अध्यक्षता में हुई। इसमें मुख्यालय एवं सभी क्षेत्रों में हिंदी में कामकाज की समीक्षा की गयी। श्री मिश्र ने सभी कर्मियों का आह्वान किया कि वे राजभाषा हिंदी में अधिकाधिक कार्य करें।

इस अवसर पर निदेशक तकनीकी (संचालन) श्री बी. के. मिश्रा, निदेशक (कार्मिक) डॉ. संजय कुमार, निदेशक (वित्त) श्री एस. एम. चौधरी तथा अन्य विभाग प्रमुख उपस्थित थे।

प्रारंभ में महाप्रबंधक (कार्मिक/राजभाषा प्रमुख) श्री इक़बाल सिंह ने स्वागत भाषण किया।कार्यक्रम का संचालन एवं हिंदी की रिपोर्ट प्रस्तुत करते हुए सहायक प्रबंधक (राजभाषा) डॉ मनोज कुमार ने धन्यवाद ज्ञापन किया।विश्व पुस्तक दिवस के निमित्त बैठक में उपस्थित सभी व्यक्तियों को हिंदी की एक एक पुस्तक भी भेंट की गयी, जिसकी सब ने सराहना की।

****

वेकोलि में "कार्य -स्थल पर सुरक्षा एवं स्वास्थ्य" पर शपथ के साथ, कार्यशाला सम्पन्न

वेस्टर्न कोलफील्ड्स लिमिटेड (वेकोलि) में आज (शनिवार, 28 अप्रैल 2018 को) सुरक्षा ध्वज़ निदेशक तकनीकी (संचालन) श्री बी. के. मिश्रा ने फहराया। ततपश्चात "कार्यस्थल पर सुरक्षा एवं स्वास्थ्य" की शपथ निदेशक (कार्मिक) डॉ. संजय कुमार ने दिलायी। इस अवसर पर निदेशक तकनीकी (योजना व परियोजना) श्री टी. एन. झा, सी आई एल सेफ़्टी बोर्ड के सदस्य श्री सी. जे. जोसफ़,

महाप्रबंधक (सुरक्षा एवं संरक्षण) श्री ए. के. सिंह प्रमुखता से उपस्थित थे।

अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन की निगरानी में "कार्यस्थल पर सुरक्षा एवं स्वास्थ्य के लिए विश्व दिवस" के निमित्त कम्पनी मुख्यालय में एक दिवसीय कार्यशाला भी आयोजित की गयी।

निदेशक खान सुरक्षा (विद्युत) भारत सरकार श्री. सी. पलनी मलई एवं डॉ. डी. के. महापात्रा मुख्य चिकित्सा अधिकारी वेकोलि ने प्रतिभागियों को संबोधित किया। प्रस्ताविक भाषण श्री सी जे जोसफ़ ने किया। कार्यशाला में मुख्यालय एवं कम्पनी के सभी क्षेत्रों के अधिकारियों ने भाग लिया।

****

वेकोलि ने उत्पादन एवं प्रेषण में कीर्तिमान बनाया

कोल इंडिया लिमिटेड की अनुषंगी कम्पनी, वेस्टर्न कोलफील्ड्स लिमिटेड (वेकोलि) ने कल (31 मार्च, 2018 को) समाप्त हुए वित्तीय वर्ष 2017-18 में कोयला-उत्पादन, प्रेषण और ओवर बर्डन रिमूवल में नया कीर्तिमान स्थापित किया। कम्पनी ने अपने विकास और विस्तार तथा निगमित सामाजिक दायित्व (कार्पोरेट सोशल रेस्पोंसिबिलिटी) के क्षेत्र में भी सफलता के नये आयाम स्थापित किये।

उल्लेखनीय है कि, 2017-18 के दौरान अब तक का सर्वाधिक 46.22 मिलियन टन कोयला-उत्पादन कर, वेकोलि ने वर्ष 2009-10 में45.7 मिलियन टन के अपने ही रिकार्ड को पार कर लिया है। पिछले वर्ष के कोयला उत्पादन की तुलना में कम्पनी ने वृद्दि दर्ज़ की है। यह लगातार चौथा साल है, जब वेकोलि ने कोयला-उत्पादन में उत्तरोत्तर बढ़ोत्तरी की है, जबकि 2009-10 से 2013-14 में कम्पनी ने लगातार पांच वर्ष ऋणात्मक वृद्धि दर्ज़ की थी। पिछले तीन वर्षों के

दौरान, 19 परियोजनाएं प्रारम्भ करने से उत्पादन में यह वृद्धि लगातार चारों वर्ष बरकरार रह सकी तथा इन नयी परियोजनाओं से 2017-18 में 27 मिलियन टन से अधिक कोयला-उत्पादन संभव हो सका। भविष्य में भी उत्पादन का यही स्तर कायम रखने के लिए वेकोलि ने वर्तमान खदानों की क्षमता में बढ़ोत्तरी हेतु आवश्यक कदम उठाये हैं, जिससे वर्ष 2018-19 में 6.5 मिलियन टन कोयला-उत्पादन बढ़ सकेगा।

इसी तरह, कम्पनी ने 2017-18 में अब तक का सर्वाधिक 48.76 मिलियन टन कोयला प्रेषण (डिस्पैच) कर नई उपलब्धि हासिल की, जो 2009-10 के दौरान 45.509 मिलियन टन था। आलोच्य वर्ष में वेकोलि 23.5 % ऑफ़ टेक के साथ कोल इंडिया की सभी अनुषंगी कम्पनियों में अव्वल रही है। इतना ही नहीं, कम्पनी ने 9204 रेक कोयला डिस्पैच किया, जो गत वर्ष के मुकाबले 28.84 % अधिक है। 31 मार्च, 2018 को कंपनी ने एक दिन में सर्वाधिक 3.41 लाख टन कोयला उत्पादन तथा एक दिन में सर्वाधिक 1.82 लाख टन कोयला प्रेषण का रिकार्ड दर्ज किया।

खदानों में पर्याप्त कोयला भंडार रहने से 2017-18 के दौरान उपभोक्ताओं को, उनकी मांग के अनुसार कोयला उपलब्ध करवाने में वेकोलि सफल रही। 01 अप्रैल, 2018 को कम्पनी के पास 11.60 मिलियन टन कोयला-भंडार है, जोकि उपभोक्ताओं की मांग पूरी करने में सहायक सिद्ध होगा।

वित्तीय वर्ष 2017-18 हेतु वेकोलि पूंजीगत व्यय के लक्ष्य 1050 करोड़ रूपये से अधिक व्यय करने में सफल रही है, जो कम्पनी के विकास में सहायक होगा।

2017-18 में 185.29 मिलियन क्यूबिक मीटर ओवर बर्डन रिमूवल के साथ कम्पनी ने उपलब्धि प्राप्त की, जो गत वर्ष से करीब 12 %अधिक है।

वर्ष 2018-19 में वेकोलि 50 मिलियन टन से आगे 52.5 मिलियन टन कोयला-उत्पादन करने की ओर अग्रसर है। इस वर्ष 58.7 मिलियन टन कोयला-डिस्पैच का लक्ष्य भी कम्पनी हासिल करेगी।

पिछले चार वर्षों में लगातार वृद्धि दर्ज़ करते हुए, वर्ष 2017-18 में, ओडीशा में चार कोयला ब्लॉक प्राप्त करने के बाद वेकोलि अब 100 मिलियन टन के प्रतिष्ठित क्लब में प्रवेश के लिए आशान्वित है। ओडीशा में कम्पनी को घोघरपल्ली, डीप साइड ऑफ़ घोघरपल्ली, रम्पिया तथा डीप साइड ऑफ़ रम्पिया ब्लाक खनन-उत्पादन हेतु आबंटित हुए हैं। इन चार ब्लॉक्स में से दो बड़े ओपन कास्ट माईन में, प्रत्येक से 25 मिलियन टन कोयला-उत्पादन

कर 50 मिलियन टन प्राप्त करने की योजना है। इन ब्लॉक्स से शीघ्रातिशीघ्र कोयला निकालने की हरसंभव कोशिश की जा रही है। इन नये ब्लॉक्स से वेकोलि को न केवल अधिक कोयला मिलेगा, बल्कि कम्पनी की वित्तीय स्थिति भी सुदृढ़ होगी। इस अधिग्रहण से वेकोलि, कोल इंडिया की पहली ऐसी कम्पनी बन गयी है, जिसका कार्य-क्षेत्र तीन राज्यों; महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश और ओडीशा में भी है।

इसका जिक्र यहाँ प्रासंगिक होगा कि, कोयला-उत्पादन और प्रेषण की अपनी प्रमुख गतिविधियों को बखूबी अंजाम देते हुए, वर्ष 2017-18के दौरान अग्रणी वेकोलि ने निगमित सामाजिक दायित्व (CSR) में उल्लेखनीय उपलब्धियां हासिल की हैं। खदानों से निकले पानी का ग्रामीणों के लिए उपयोग, नागपुर के पास पाटन सावंगी में बड़े आर. ओ. प्लांट की स्थापना की गयी है। यहाँ से स्थानीय ग्रामीण आबादी को "कोल नीर" उपलब्ध करवाया जायेगा। 2018-19 में छह और आर. ओ. प्लांट्स लगवाने की योजना है, जिससे सम्पूर्ण ग्रामीण आबादी को एकदम न्यूनतम लागत पर शुद्द्ध पेयजल प्राप्त हो सके। कम्पनी 2018-19 में कम्पनी का लक्ष्य "कोल नीर" को व्यावसायिक स्तर पर भी लॉन्च करने का है।

बड़ी मात्रा में, खदान के पानी की उपलब्धता के आलोक में, वेकोलि ने महाजेनको के साथ खापरखेडा ताप विद्युत् गृह हेतु, भानेगांव खदान से प्रतिदिन 6.48 मिलियन गैलन पानी आपूर्ति के सहमति-पत्र (MoU) पर महाराष्ट्र के माननीय मुख्यमंत्री की प्रमुख उपस्थिति में,हस्ताक्षर किया। इससे न केवल महाजेनको के संयंत्र को निकटतम स्रोत से पानी मिलेगा, बल्कि महाजेनको द्वारा पहले उपयोग किया जा रहा पानी अब नागपुर शहर को मिल सकेगा। कंपनी विदर्भ सिंचाई विकास निगम (VIDC) के साथ भी सिंचाई के लिए नागपुर क्षेत्र की खदान से प्रतिदिन 17.47 मिलियन गैलन पानी प्रदान करने हेतु MoU करने को तैयार है। चंद्रपुर तथा यवतमाल जिले में भी खदान के पानी का सिंचाई और पेयजल हेतु उपयोग कुछ अन्य परियोजनाएं शुरू की जा रही हैं।

विदित हो कि, प्रधानमंत्री आवास योजना के तहत सस्ती आवास योजना के लिए 2017-18 के दौरान, वेकोलि द्वारा न्यूनतम लागत पर नागपुर सुधार प्रन्यास (NIT) को खदान से निकली रेत उपलब्ध कराई जा रही है। कंपनी ने मुम्बई-नागपुर सुपर एक्सप्रेस वे के निर्माण हेतु भारतीय राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण (NHAI) को ओवर बर्डन की मिट्टी एवं रेत प्रदान किया है। वर्ष 2018-19 में वेकोलि बहुत ही न्यूनतम दर पर, रेत के व्यावसायिक कारोबार की तैयारी कर चुकी है। निर्माण-उद्योग में इस्तेमाल हेतु ओवर बर्डन से निकले पत्थर के टुकड़े तथा ईंट भी कंपनी उपलब्ध करवा रही है। ओवर बर्डन से रेत निकाल कर उसके व्यावसायिक उपयोग हेतु, नागपुर के पास गोंड़ेगांव में बड़ा रेत संयंत्र लगाने की योजना को शीघ्र ही मूर्त

रूप दिया जायेगा।

नागपुर तथा इसके आस-पास की छात्राओं को सैनिटरी पैड प्रदान करने की योजना “प्रोजक्ट पंख” को मिली सफलता के बाद इसका और विस्तार किया जायेगा। 50 लाख रूपये की लागत से 100 शैक्षणिक संस्थानों में सैनिटरी पैड वेंडिंग मशीन लगवाई जाएगी।

कम्पनी की बहुचर्चित ईको माईन टूरिज्म को भी अभूतपूर्व सफलता मिल रही है। नागपुर के पास सावनेर में अब तक देश-विदेश के करीब 1.36 लाख पर्यटकों ने सपरिवार इसका आनन्द उठाया है। वेकोलि ने यवतमाल जिले के वणी नार्थ क्षेत्र में भी एक और ईको माईन टूरिज्म प्रारम्भ किया है।

****

राजभाषा विधा